वृत्तपत्राचे नांव :– हिन्दी मिलाप
वृत्तपत्र प्रकाशनाचे ठिकाण :– हैद्राबाद
वृत्तपत्र पान क :– 7
दिनांक :–2/8/2010

कैसे जागृत होता है देवत्व

हमें वैदिक परम्परा से जो ज्ञान मिला हुआ है, वह विश्व का सर्वोत्कृष्ट ज्ञान है और इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए देश-विदेश कथित तौर पर बड़े-बड़े माने जाने वाले शिक्षण संस्थानों में नहीं जाना पड़ता है। बड़ी-बड़ी किताबें नहीं पढ़नी पड़ती हैं। यह ज्ञान तो आत्मचेतना को जागृत करके प्राप्त होता है। इसीलिए अपने यहां कहा जाता है कि ज्ञान किताबों से नहीं साधना से प्राप्त होता है और भावातीत ध्यान तथा भावातीत ध्यान सिद्धि कार्यक्रम साधना की सबसे सुगम विधा है।

सारे विश्व में ऐसा कौन-सा देश है, जिसको देवभूमि कहा जाता है? देवभूमि भारत। भारत को ही देवभूमि क्यों कहा जाता है? इसका उत्तर यह है कि यहां के कण-कण में दैवी शक्ति संचारित रहती है। इससे व्यष्टि और समष्टि की चेतना में देवत्व जागृत रहता है। यह देवत्व क्यों और कैसे जागृत रहता है? क्योंकि हम इस देवत्व को जगाए रखने वाले वैदिक विधानों को जानते हैं, मानते हैं। क्यों जानते हैं और क्यों मानते हैं? इसलिए कि परम्परा से जो यह विद्या हमारी दैनिकता में व्यवहारिक तौर पर चली आ रही है, उसके गुण और फल को सिद्ध होते हुए देखते हैं। इस विद्या को मानने का यही कारण है कि ये वेद विद्यायें प्रत्येक क्षेत्र में अपना प्रभाव और कारगरता सिद्ध करती हैं और सुचारुता बनाये रखती हैं। हम वेद विद्या में परम्परा से जानते हैं कि कब, कौन-सी दैवी शक्ति को जागृत करने की आवश्यकता है और इसे किन विधानों से कैसे जागृत किया जा सकता है?

हमें वैदिक परम्परा से जो ज्ञान मिला हुआ है, वह विश्व का सर्वोत्कृष्ट ज्ञान है और इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए

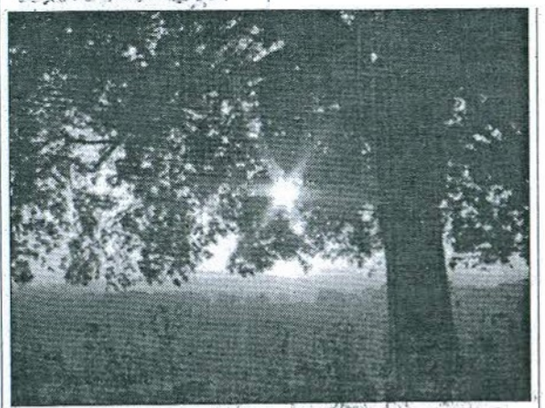

देश-विदेश कथित तौर पर बड़े-बड़े माने जाने वाले शिक्षण संस्थानों में नहीं जाना पड़ता है। बड़ी-बड़ी किताबें नहीं पढ़नी पड़ती हैं। यह ज्ञान तो आत्मचेतना को जागृत करके प्राप्त होता है। इसीलिए अपने यहां कहा जाता है कि ज्ञान किताबों से नहीं साधना से प्राप्त होता है और भावातीत ध्यान तथा भावातीत ध्यान सिद्धि कार्यक्रम साधना की सबसे सुगम विधा है। अब तो आधुनिक विज्ञान के शोधों से भी स्पष्ट हो गया है कि देवी-देवताओं की संस्थाएं मनुष्य के मस्तिष्क, हृदय एवं अन्य अंगों में विद्यमान है। भावातीत ध्यान और भावातीत ध्यान सिद्धि कार्यक्रम के अभ्यास से, दैवी अनुष्ठानों के आयोजन से, वैदिक साधना से मनुष्य की चेतना जैसे-जैसे भावातीत, परा, भगवद् और ब्राह्मी स्तर तक जागृत हो जाती है, वैसे-वैसे ये देवी-देवता संकल्प मात्र से व्यक्ति और समाज के काम स्वत: पूरा करने लगते हैं।

इसीलिए तो हमारे यहां व्यक्ति की जीवनचर्या में देवी-देवताओं का और उनसे जुड़े अनुष्ठानों का, साधना का और अन्य किसी भी प्रकार के दैवी-वैदिक अनुष्ठानों का विशेष महत्व है। इसीलिए यहां जगह-जगह दैवी पीठें हैं। द्वादश ज्योतिर्लिंग हैं, शक्ति पीठें हैं, तीर्थ हैं। यहां का हर दिन किसी न किसी देवता से सम्बद्ध है। गांव-गांव के लोक जीवन में विभिन्न देवी-देवताओं की शक्ति की मान्यता है। इन्हीं की शक्ति को अपनी तथा सामूहिक चेतना में जागृत करने के लिए समय-समय पर विशिष्ट देवता से जुड़े पर्व-त्यौहार हैं। इन अवसरों पर सम्बन्धित देवी-देवता का आह्वान कर उनकी विधिवत पूजा, अर्चना, मंत्रोंचारण और साधना की जो परम्परा है, उससे सामूहिक चेतना में दैवी चेतना का अनवरत लहरा चलता रहता है। इस सबसे हमारी चेतना में दैवी तत्व निरंतर प्रवाहमान रहता है।

– महर्षि महेश योगी